United International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 3048-6726 (UIJMR) Impact Factor: 6.934 (SJIF)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
www.uijmr.in Vol-3, Special Issue-II ,2026

भारतीय ज्ञान परंपरा में गुरु-शिष्य संबंध

शेक शबीना बेगम
स्नातकोत्तर ,पी.आर शाशाकीय महाविद्यालय ,ककिनाडा

प्रस्तावना

विश्व की प्राचीन परम्पराओं में भारतीय ज्ञान परंपरा भी एक मानी जाती है। इस परंपरा का मूल आधार 'गुरु-शिष्य संबंध' रहा है। भारत में शिक्षा केवल बौद्धिक विकास तक सीमित ना रह कर वह व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का माध्यम बना है। ज्ञान केवल सूचना ना मान कर आत्मिक उन्नति का साधन माना गया है। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति में गुरु को भगवान से भी ऊँचा स्थान दिया गया है।

गुरु-शिष्य का संबंध भारतीय समाज की नैतिक और सांस्कृतिक व्यवस्ता की नींव रहा है। इस परंपरा के माध्यम से ज्ञान और संस्कार एक पीढ़ी से दुसरे पीढ़ी तक पहुँचाते रहें हैं । वैदिक काल से लेकर आज तक यह परंपरा किसी न किसी रूप में बनी हुई है। प्राचीन काल में गुरु आश्रम में शिष्यों को शिक्षा देते थे और उन्हें अच्छे संस्कार भी सिखाते थे |गुरु केवल पढ़ाने वाले नहीं बल्कि शिष्य को सही जीवन – राह दिखाने वाले मार्गदर्शक होते थे | इसका उद्देश्य भारतीरय ज्ञान परंपरा में गुरु-शिष्य संबंध की भावना, उसके स्वरूप उसमे निहित मूल्यों तथा आज के समय में उसके उपयोगिता का अध्ययन करना है |

गुरु की संकल्पना

भारतीय दर्शन में 'गुरु' शब्द का बहुत बड़ा और गहरा अर्थ है। 'गु' का मतलब है अंधकार और 'रु' का अर्थ है उसे दूर करने वाला। इसीलिए " गुरु " वह होता है जो अज्ञान के अंधकार को दूर करके ज्ञान का प्रकाशन देता है | गुरु केवल पढ़ाने वाला व्यक्ति नहीं होता बल्कि वह सही रास्ता दिखने वाला, प्रेरणा देने वाला, जीवन को समझाने वाला होता है |
शास्त्रों में गुरु की महिमा का अनेक स्थानों पर वर्णन मिलता है—

"गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।"
"गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥"

गुरु ब्रह्मा के समान हैं, जो ज्ञान की सृष्टि करते हैं।
गुरु विष्णु के समान हैं, जो उस ज्ञान का पालन-पोषण करते हैं।
गुरु महेश (शिव) के समान हैं, जो अज्ञान को नष्ट करते हैं।
गुरु स्वयं परम ब्रह्म के रूप हैं, ऐसे गुरु को मैं प्रणाम करती हूँ।

उपनिषदों में गुरु को ब्रह्मविद्या का प्रदाता बताया गया है। गुरु शिष्य को केवल विषय-ज्ञान नहीं देता, बल्कि उसे आत्मज्ञान की ओर अग्रसर करता है। इस प्रकार गुरु की भूमिका आध्यात्मिक, नैतिक तथा बौद्धिक तीनों स्तरों पर महत्त्वपूर्ण रही है।

शिष्य की भूमिका और आदर्श

गुरु-शिष्य का संबंध तभी पूरा और सफल होता है जब शिष्य में भी अच्छे गुण हों। भारतीय परंपरा में शिष्य को श्रद्धा रखनेवाला, अनुशाशन में रहनेवाला और इच्छा रखनेवाला माना गया है। शिष्य का मुख्य गुण विनम्रता है। वह गुरु के प्रति पूर्ण विश्वास रखता है और ज्ञान पाने के लिए खुद को समर्पित करता है।

भगवद्गीता में कहा गया है—

"तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।"

अर्थात शिष्य को नम्रता के साथ प्रश्न पूछते हुए और सेवा की भावना से ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

शिष्य का काम केवल सुनना ही नहीं होता, बल्कि जो सीखा है उसे अपने जीवन में अपनाना भी होता है। वह गुरु की बात को अपने जीवन का मार्ग मानता है। इस तरह गुरु-शिष्य का संबंध एक तरफ़ा नहीं होता बल्कि आपसी विश्वास और जिम्मेदारी का होता है।

गुरुकुल व्यवस्था और शिक्षा प्रणाली

प्राचीन भारत में शिक्षा गुरुकुल पर आधारित थी। शिष्य गुरु के आश्रम में रहकर गुरु सेवा करते हुए शिक्षण किया करता था। यह शिक्षा प्रणाली जीवन से जुड़ी हुई होती थी। यहाँ शिक्षा केवल किताबों तक सीमित नहीं थी, बल्कि काम करते हुए और अनुभव से भी सीखा जाता है। गुरुकुल में वेद, उपनिषद के साथ – साथ व्याकरण, गणित, खगोलशास्त्र, आयुर्वेद, राजनीति तथा युद्ध-कला जैसे विषय भी पढ़ाए जाते थे। साथ ही अच्छे आचरण और नैतिक गुणों का शिक्षण और आत्मसंयम की शिक्षा पर भी खास ध्यान दिया जाता था। इस व्यवस्था में गुरु शिष्य के संपूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण करता था। शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार पाना नहींनं था , बल्कि समाज के लिए उपयोगी नागरिक तैयार करना था।

भारतीय ज्ञान परंपरा में गुरु-शिष्य संबंध का महत्त्व

भारतीय ज्ञान परंपरा में गुरु-शिष्य का संबंध केवल पढ़ाई तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारी संस्कृति की एक मजबूत परंपरा है। इस संबंध के माध्यम से ज्ञान, अच्छे मूल्य और संस्कार एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचते हैं। गुरु शिष्य को सिर्फ विषयों का ज्ञान नहीं देता, बल्कि सही जीवन जीने का तरीका, नैतिकता और समाज के प्रति जिम्मेदारी भी सिखाता है। इसलिए इस परंपरा को भारतीय समाज की आत्मा कहा जाता है।

गुरु शिष्य को आत्मनिर्भर और समझदार बनाता है। वह शिष्य के अंदर छिपी क्षमताओं को विकसित करता है और उसे समाज के लिए उपयोगी व्यक्ति बनाता है। दूसरी ओर, शिष्य गुरु से मिले ज्ञान और संस्कारों को आगे बढ़ाकर इस परंपरा को जीवित रखता है। इस तरह गुरु-शिष्य का संबंध केवल व्यक्ति के विकास का साधन नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति को बचाने और आगे बढ़ाने का एक मजबूत माध्यम है।

आदर्श गुरु-शिष्य परंपरा के उदाहरण

भारतीय परंपरा में अनेक आदर्श गुरु-शिष्य संबंध मिलते हैं—

वशिष्ठ – राम : वशिष्ठ ने राम को राजधर्म और जीवन-मूल्य सिखाए।
द्रोणाचार्य – अर्जुन : अर्जुन को श्रेष्ठ धनुर्धर बनाया।
संदीपनि – कृष्ण : श्रीकृष्ण ने संदीपनि आश्रम में शिक्षा प्राप्त की।
रामकृष्ण परमहंस – स्वामी विवेकानंद : विवेकानंद को आध्यात्मिक नेतृत्व प्रदान किया।
चाणक्य – चंद्रगुप्त मौर्य : चंद्रगुप्त को कुशल शासक बनाया।
इन उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि गुरु शिष्य के व्यक्तित्व को दिशा देता है।

गुरु-शिष्य संबंध और नैतिक मूल्य

गुरु-शिष्य के संबंध से समाज में कई अच्छे गुण विकसित होते हैं,
जैसे सत्य, सेवा, कर्तव्य, संयम, सहनशीलता और अनुशासन। यह परंपरा व्यक्ति को केवल पढ़ा-लिखा नहीं, बल्कि अच्छा इंसान बनाती है। गुरु शिष्य को अपने ऊपर नियंत्रण रखना और समाज के प्रति जिम्मेदारी निभाना सिखाता है।

आधुनिक युग में गुरु-शिष्य संबंध

आज की शिक्षा व्यवस्था में गुरु-शिष्य का संबंध औपचारिक होता जा रहा है। अब शिक्षा का मुख्य लक्ष्य नौकरी पाना बन गया है। तकनीक के कारण गुरु और शिष्य के बीच सीधा संपर्क कम हो रहा है, जिससे उनके रिश्ते में अपनापन कम होता जा रहा है। फिर भी आज भी शिक्षक समाज को बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

आज के समय में गुरु का काम केवल पढ़ाना ही नहीं, बल्कि सही दिशा दिखाना भी है। इसलिए जरूरत है कि गुरु-शिष्य के संबंध को फिर से अच्छे मूल्यों से जोड़ा

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा में गुरु-शिष्य का संबंध केवल पढ़ाई का साधन नहीं, बल्कि जीवन का आधार है। यह संबंध व्यक्ति को अच्छे संस्कार देता है और उसे नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से विकसित करता है। आज के समय में भी अगर हम इस परंपरा को अपनाएँ, तो समाज और अधिक अच्छा बन सकता है। गुरु-शिष्य का संबंध भारतीय संस्कृति की आत्मा है और इसकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में गुरु-शिष्य संबंध शिक्षा की नींव रहा है। यह संबंध केवल ज्ञान देने तक सीमित नहीं, बल्कि व्यक्तित्व बनाने का माध्यम है। गुरु शिष्य को सही आचरण, अनुशासन और कर्तव्य की शिक्षा देता है। शिष्य गुरु के आदर्शों को अपनाकर समाज में फैलाता है। इसी परंपरा से ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक सुरक्षित रहा है।

आज के आधुनिक युग में भी गुरु-शिष्य संबंध का महत्व बना हुआ है। तकनीक के समय में इस संबंध को मानवीय मूल्यों से जोड़ना बहुत जरूरी है। गुरु-शिष्य परंपरा भारतीय संस्कृति की आत्मा मानी जाती है। यह परंपरा समाज को अच्छे संस्कारों वाले और जिम्मेदार नागरिक देती है। इसलिए गुरु-शिष्य संबंध की रक्षा करना और उसे आगे बढ़ाना हमारा नैतिक कर्तव्य है |

संदर्भ

Wikipedia https://share.google/tZFXB8l5XIPYTrwq
https://sksgurukulschool.com/guru-shishya-parampara-in-indian-tradition/#google_vignette
https://www.azaadbharat.org/guru-shishya-parampara-adhyatmik-gyan/
https://www.youtube.com/watch?v=BqKLOVHk36Y